## SHRI BINOD MAHARANA

Shri Binod Maharana is widely recognized for his great fine art and traditional "Patta painting" talent not only in India but also in abroad too.

2. Born on 3rd February, 1945, in a traditional artist family of "Chitrakara Sahi" in Puri, Odisha, Shri Maharana pursued intensive coaching in traditional "Patta painting" from his grandfather, Shri Markanda Maharana and fine art training from Guruji Shri Asit Mukherjee. He is distinguished for his 50 years of rigorous research on Pattachitra. During this long research span, he made detailed studies and observations of the interior art forms of ancient temples and palm leaves stored in various museums. He has applied the essence of those ancient art forms to his Pattachitra. He is also highly praised by art lovers for his unique touch to the mythological and social art forms, which is a valuable addition to the ancient art world.

3. Shri Maharana joined State Institute of Handicraft Training (SIHT), Odisha in the year 1973 and retired as Artist Superintendent from SIHT in February, 2003. He was also a member of the General Body of Odisha Lalit Kala Academy and member of Utkal Charukala Parishad, Bhubaneswar. He demonstrated Palm-Leaf carving in Boston (USA) in the year 1987, organized by National Council of Science Museum, Calcutta. He has trained more than 300 trainees in palm leaf carving and Patta painting. After retirement, he is preparing the future generation of artists through his "Sunday School" concept in Bhubaneswar, Odisha. He has participated in several exhibitions and artist camps across the country.

4. Shri Maharana is the recipient of numerous awards and honours including State Award from Director of Industries, Odisha in 1974; National Award of All India Handicraft Board, New Delhi in 1974; Award from Academy of Fine Arts, Kolkata in 1975; Utkal Charu Kala Parishad's Best Artist Award in 1978; Viswakarma Citation Award by the then Prime Minister of India Smt. Indira Gandhi in 1983; Odisha Lalit kala Academy Award, Bhubaneswar in 1983; Life time Achievement Award in Handicrafts, Handloom, Textiles & Handicrafts, Government of Odisha in 2014; Shilpi Samrat Award by Odisha Modern Art Gallery in 2017; Sarala Puraskar, Ella Panda Chitra Kala Samman in 2018; Dharmapada Award in 2019 by Odisha Lalit Kala Academy, Bhubaneswar, Odisha; 75th Capital Foundation Day- 2023, "Rajdhani Gaurav Samman" by Odisha Government. He was also honoured by Boston Museum of Sciences in 1987 and by India Association of Greater Boston, USA in 1987.

## श्री बिनोद महारना

श्री बिनोद महारना को उनकी महान ललित कला और पारंपरिक "पट्टा चित्रकारी" प्रतिभा के लिए भारत और विदेश में व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त है।

2. 3 फरवरी, 1945 को पुरी, ओडिशा के एक पारंपरिक कलाकार परिवार "चित्रकार साही" में जन्मे, श्री महारना ने अपने दादा, श्री मारकंडा महाराणा से पारंपरिक "पट्टा चित्रकारी" का गहन प्रशिक्षण और गुरुजी श्री असित मुखर्जी से ललित कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वह पट्टा चित्रकारी पर अपने 50 वर्षों के कठोर शोध के लिए विख्यात हैं। इस लंबे शोध काल के दौरान, उन्होंने प्राचीन मंदिरों के आंतरिक कला रूपों और विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहीत ताड़ पत्रों का विस्तृत अध्ययन और अवलोकन किया। उन्होंने उन प्राचीन कला रूपों का सार अपने पट्टा चित्रों में अपनाया है। पौराणिक और सामाजिक कला रूपों के प्रति उनके विशिष्ट कार्य के लिए कला प्रेमियों द्वारा भी उनकी अत्यधिक प्रशंसा की जाती है। उनका यह कार्य प्राचीन कला जगत के लिए बहुमूल्य योगदान है।

3. श्री महारना ने वर्ष 1973 में राज्य हस्तशिल्प प्रशिक्षण संस्थान (एसआईएचटी), ओडिशा में कार्यभार ग्रहण किया और फरवरी, 2003 में एसआईएचटी से कलाकार अधीक्षक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। वह ओडिशा ललित कला अकादमी की जनरल बॉडी के सदस्य और उत्कल चारुकला परिषद, भुवनेश्वर के सदस्य भी थे। उन्होंने वर्ष 1987 में नेशनल काउंसिल ऑफ साइंस म्यूजियम, कलकत्ता द्वारा आयोजित बोस्टन (यूएसए) में ताड़पत्र नक्काशी का प्रदर्शन किया। उन्होंने ताड़ पत्रों पर नक्काशी और पट्टा चित्रकारी में 300 से अधिक प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया है। सेवानिवृत्ति के बाद, वह ओडिशा के भुवनेश्वर में अपनी "संडे स्कूल" अवधारणा के माध्यम से कलाकारों की भावी पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं। उन्होंने देश भर की कई प्रदर्शनियों और कलाकार शिविरों में भाग लिया है।

4. श्री महारना को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं, जिनमें 1974 में उद्योग निदेशक, ओडिशा से राज्य पुरस्कार; 1974 में अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड, नई दिल्ली का राष्ट्रीय पुरस्कार; 1975 में ललित कला अकादमी, कोलकाता से पुरस्कार; 1978 में उत्कल चारु कला परिषद का सर्वश्रेष्ठ कलाकार पुरस्कार; 1983 में भारत की तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा विश्वकर्मा प्रशस्ति पत्र पुरस्कार; 1983 में ओडिशा ललित कला अकादमी, भुवनेश्वर का पुरस्कार; 2014 में ओडिशा सरकार का हस्तशिल्प, हथकरघा, कपड़ा और हस्तशिल्प में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार; 2017 में ओडिशा मॉडर्न आर्ट गैलरी द्वारा शिल्पी सम्राट पुरस्कार; 2018 में सरला पुरस्कार, एला पांडा चित्र कला सम्मान; ओडिशा ललित कला अकादमी, भुवनेश्वर, ओडिशा द्वारा 2019 में धर्मपद पुरस्कार; ओडिशा सरकार द्वारा 75वां राजधानी स्थापना दिवस– 2023, "राजधानी गौरव सम्मान" शामिल हैं। उन्हें 1987 में बोस्टन म्यूजियम ऑफ साइंसेज और 1987 में इंडिया एसोसिएशन ऑफ ग्रेटर बोस्टन, यूएसए द्वारा भी सम्मानित किया गया था।